Page No.
Date

YOUVA

UG study material for students of History

Subject : History

Class : U.G Semester IV

Paper : MJC-06

Topic : Napoleonic Impact on European Nations (यूरोपीय देशों पर नेपोलियन का प्रभाव) : II

By : Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor
Dept. of History
Jagjiwan College, Ara.

Scanned by CamScanner

Page No
Date
YOUVA

यूरोपीय देशों पर नेपोलियन का प्रभाव : II

(Napoleonic Impact on European Nations : II

यूरोपीय देशों में राष्ट्रवाद की भावना के उदय में नेपोलियन की देन

अपनी पराजय के बाद सेण्ट हेलेना द्वीप में निर्वासित जीवन बिताते के दरम्यान नेपोलियन ने अपने जो संस्मरण लिखे उसमें उसने यह दावा किया कि अपने शासनकाल में उसने जर्मनी और इटालवियों, पोलों तथा अन्य यत्र-तत्र बिखरे हुए लोगों की राष्ट्रीय अभिलाषाओं को साकार करने का प्रयत्न किया था। क्या नेपोलियन को सचमुच ही जर्मनी और इटालवी एकता का शिल्पकार और पोलिश राष्ट्रवाद के संरक्षक के रूप में देखा जा सकता है? वस्तुतः, उसने दो प्रकार से यूरोपीय जनता की राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत किया। जर्मनी और इटली में मौजूदा राज्यों की संख्या कम कर देने के माध्यम से उसने इन दोनों के बीच अधिक एकता की भावना को जन्म दिया होगा। जहाँ कि अठारहवीं सदी के अन्त में जर्मनी में लगभग 338 राज्य थे, वहीं क्रांतिकारी फ्रांस की सेना और नेपोलियन की सेना के विजय-अभियानों के बाद केवल आस्ट्रिया और प्रशा सहित राज्य संघ ही रह गये थे। इसके

Scanned by CamScanner

अतिरिक्त, 1806 ई० में नेपोलियन ने पवित्र रोमन साम्राज्य को भी समाप्त कर दिया। इस तरह उसने अनजाने ही उन लोगों के लिए रास्ता खोल दिया जिन्होंने बाद में एक संगठित जर्मनी का नारा बुलन्द किया। इटली के प्रायद्वीप में फ्रांसीसियों द्वारा स्थापित राजनीतिक संगठन 1815 ई० के बाद नष्ट हो गया, लेकिन यह तथ्य है कि इटली वाले उन दिनों को याद करते थे, जब नेपोलियन का शासन था और जब असंख्य राज्य तीन भागों में विभक्त थे- सीधे फ्रांसीसी साम्राज्य में मिला लिया गया भाग, इटली का राज्य तथा नेपुल्स और सिसली का राज्य। रोमन साम्राज्य के दिनों से लेकर अब तक इटली ने इतने व्यापक पैमाने पर एकता का अनुभव नहीं किया था। इसके अतिरिक्त, 1807 ई० में वारसा के ग्रैण्ड डची और 1809 ई० में इसमें पश्चिमी गैलेसिया को मिलाकर नेपोलियन ने पोलैण्ड के लोगों की स्वतन्त्र राज्य की अभिलाषा को पुनर्जागृत कर दिया।

एक-दूसरे तरीके के जरिये भी नेपोलियन ने यूरोपियनों के बीच राष्ट्रीय-भावना जागृत करने में सहयोग दिया। वह था फ्रांसीसी प्रभुता और आधिपत्य के विरुद्ध उनमें देशभक्तिपूर्ण विक्षोभ को जगाना। यह भावना काफी शक्तिशाली रूप में सभी यूरोपीय देशों में उभरी तथा स्वदेशवासियों

के प्रति एकता की नयी भावना के रूप में परिलक्षित हुई। सभी प्रबुद्धजन देशभक्ति की एक नयी भावना से प्रेरित होने लगे। जर्मन राष्ट्रवाद नेपोलियन के युद्धों के दरम्यान एक जोरदार शक्ति के रूप में प्रकट हुआ। नेपोलियन ने जिस प्रकार जर्मन भाषी क्षेत्रों को तोड़-मरोड़ कर मनमाने ढंग से प्रादेशिक राज्य बनाने की चेष्टा की थी, उसके गर्भ से राष्ट्रवाद का वह पौधा जन्मा जिसने यूरोप के परवर्ती विकास की रक्षा की। जर्मनों ने न केवल नेपोलियन के शासन के विरुद्ध, बल्कि फ्रांसीसी सभ्यता की सदियों पुरानी प्रभुसत्ता के विरुद्ध भी विद्रोह किया था। इसी काम में जर्मन दार्शनिक हरडर ने अपनी 'वोल्कजिस्ट' की धारणा को प्रस्फुटित किया जिसमें विदेशी संस्कृति के परित्याग की बात कही गयी थी। जर्मनी के दार्शनिक लेखक जोआन फिक्टे के दर्शन का उद्देश्य जर्मन राष्ट्रवाद की भावना को जाग्रत करना था। आर्न्स्ट मोरिज आन्त नामक एक इतिहासकार और कवि ने नेपोलियन युग के अन्तिम चरण में कविताओं की एक शृंखला प्रकाशित की जिसमें उसने प्रश्न को उठाया कि वह संपूर्ण जर्मनी को फ्रांसीसी अत्याचारियों के गुलामी के जुए से मुक्त करे। इटली में शुरू से ही फ्रांसीसी शासन का

Scanned by CamScanner

Page No.:
Date:

विरोध होता रहा। इतालवी लोग जानते थे कि फ्रांसीसी शासन को वे जब तक उखाड़ नहीं फेंकते, तब तक उनकी राष्ट्रीय एकता का लक्ष्य हासिल होने वाला नहीं था। वहाँ के उग्र राष्ट्रवादियों ने गुप्त क्रांतियों या संगठनों में से किसी ने भी 1815 ई० के पहले कोई जनसमर्थन प्राप्त नहीं किया था। लेकिन, नेपोलियन के युग में बोये गये बीज उन्नीसवीं सदी के राष्ट्रीय आन्दोलनों में अवश्य फलीभूत हुए। इतना ही मान लेना यूरोप पर नेपोलियन के महत्वपूर्ण प्रभावों को स्वीकार करता है।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि नेपोलियन का साम्राज्य 1810-11 ई० तक बुलंदी के शिखर पर पहुँच गया था। स्पेन और पुर्तगाल ने घुटने टेक दिये थे। पोप मिमिया रहा था, स्वीडन हाथ जोड़ खड़ा था। इंग्लैंड व्यापारिक संकट से परेशान था और अमेरिका से युद्ध में उलझा हुआ था। यूरोप में हर दुश्मन का तख्ता पलट चुका था। अपनी मनमर्जी के मुताबिक उसने यूरोप का पुनर्गठन कर डाला था। रूस के ज़ार के साथ उसका गठबंधन घनिष्ठ प्रतीत होने वाला और मैत्रीपूर्ण था। फ्रांसीसी क्रांति अब बहुत पीछे छूट चुकी थी। अब फ्रांस नहीं, बल्कि नेपोलियन यूरोप पर काबिज था।

Scanned by CamScanner